प्रचारकों, प्राचीनों तथा अन्य पापियों के लिए एक प्रवचन (20:13-38; 21:1)

प्रेरितों के काम में पौलुस के सात प्रवचन दर्ज हैं।[1] जिनमें से मसीही लोगों के नाम केवल एक ही प्रवचन है जो प्रेरितों 20 में मिलता है।

हमारे पिछले पाठ के अन्त में पौलुस त्रोआस से जाने की तैयारी में था (20:11)।[2] पौलुस ने अपने सहयात्रियों को जहाज़ से जाकर रुकने के लिए कहा जबकि स्वयं वह अगली बन्दरगाह, अस्सुस[3] तक पैदल गया (आयत 13)। शायद वह जहाज़ के छूटने का इंतज़ार करने को तैयार नहीं था (वह त्रोआस में भाइयों के साथ कुछ और समय बिताना चाहता होगा) या शायद वह कुछ देर के लिए अकेला रहना चाहता होगा।[4] लूका ने लिखा:

> जब वह अस्सुस में हमें मिला[5] तो हम उसे चढ़ाकर मितुलेने में आए।[6] और वहां से जहाज़ खोलकर हम दूसरे दिन खियुस के साम्हने पहुंचे,[7] और अगले दिन सामुस में लगान किया;[8] फिर दूसरे दिन मीलेतुस में आए।[9] क्योंकि पौलुस ने इफिसुस के पास से होकर जाने की ठानी थी, कि कहीं ऐसा न हो, कि उसे आसिया में देर लगे;[10] क्योंकि वह जल्दी करता था, कि यदि हो सके, तो पिन्तेकुस्त का दिन यरूशलेम में कटे[11] (आयतें 14-16)।

स्पष्टत:, पौलुस को मीलेतुस में जहाज़ पर सामान चढ़ाने या उतारने के (या शायद किसी मरम्मत के) कारण दो या तीन दिन तक विश्राम मिल गया। उसने इफिसुस में कलीसिया के प्राचीनों के पास संदेश वाहक को यह कहकर भेजा कि वे मीलेतुस में आकर उससे मिलें।[12] वे तीस या इससे अधिक मील चलकर दक्षिण में उससे मिलने के लिए आए; और उनके पहुंचने पर पौलुस ने प्रेरितों 20 का महान विदाई प्रवचन दिया।

मुझे पौलुस की बातों को ''प्रचारकों, प्राचीनों तथा अन्य पापियों के लिए प्रवचन'' कहना अच्छा लगता है। यह संदेश स्पष्टत: प्राचीनों के लिए है; और इसमें उन्हीं को सम्बोधित किया गया था (आयत 17)। पौलुस द्वारा इफिसुस के अपने काम के बारे में बताना भी प्रचारकों के लिए महत्वपूर्ण है। परन्तु, मेरे विचार से, इसमें सभी सदस्यों के लिए संदेश है। याद रखें कि वहां केवल पौलुस और इफिसुस के प्राचीन ही नहीं बल्कि पौलुस के साथ कम से कम आठ सहयात्री भी थे (आयतें 4-6)। इसलिए, मैं इस पाठ में से उन सच्चाइयों को समझाना चाहता हूं जो हम सब के लिए प्रासंगिक हैं।

प्रचारकों के लिए एक प्रवचन

आइए प्रचारकों से आरम्भ करते हैं। अधिकतर लोग प्रचार नहीं करते, इसलिए प्रचार के विषय में उन गैर प्रचारकों से बात करना अजीब लग सकता है। परन्तु, सभी मसीहियों को यह पता होना चाहिए कि प्रचार के विषय में पवित्र शास्त्र क्या कहता है।[13] प्रचार की बहुत सी धारणाओं का आधार बाइबल की शिक्षा नहीं, बल्कि साम्प्रदायिक कलीसियाओं की रीतियां होती हैं।

प्रचार है क्या

पौलुस का प्रवचन हमें बताता है कि प्रचार क्या है। हम नकारात्मक पहलू से आरम्भ करेंगे। प्रचार जीवन में सुविधा दिलाने के लिए *नहीं* है।[14] पौलुस ने उन परीक्षाओं तथा आंसुओं की बात की जो उस पर पड़े थे (आयत 19; आयत 31 भी देखिए)। उसने उस लम्बे समय की बात की जब कई-कई घंटे ''मैंने तीन वर्ष तक रात दिन आंसू बहा बहाकर हर एक को चितौनी देना न छोड़ा'' (आयत 31); वह सुबह 8 से शाम 5 बजे तक की नौकरी नहीं करता था। उसने उस ''बन्धन और क्लेश'' (आयत 23) की बात की जो यरूशलेम में उसके लिए तैयार था।

प्रचार करने का अर्थ धन कमाना नहीं है। मैं पौलुस को प्राचीनों के सामने अपने खुरदरे तथा कठोर हाथ दिखाते व यह कहते हुए देख सकता हूं ''कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएं पूरी कीं'' (आयत 34)। शास्त्र के अनुसार एक प्रचारक को अपने निर्वाह के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त करने का अधिकार है (लूका 10:7; 1 कुरिन्थियों 9; 1 तीमुथियुस 5:18), परन्तु प्रचार करने का अर्थ आर्थिक लाभ लेना नहीं है। बल्कि, प्रचार करना एक विशेष सेवकाई को पूरा करना है।

प्रचार करने का अर्थ नौकरी पाना नहीं है। पौलुस ने अपने सुनने वालों को बताया, ''मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूं, और नहीं जानता, कि वहां मुझ पर क्या-क्या बीतेगा'' (आयत 22)। प्रचारकों को यह पता नहीं होता कि कल उनके साथ क्या होने वाला है।

हमारे पाठ में इस सच्चाई को भी कम बताया गया है कि प्रचार करने का अर्थ पास्टर कहलाना नहीं है। पौलुस ने इफिसुस के *प्रचारकों* को नहीं बुलाया; उसने *प्राचीनों* को

बुलाया (आयत 17)। जैसा कि हम देखेंगे, प्राचीनों को ही पास्टर कहा जाता है (आयतें 17, 28); प्रचारक को ''पास्टर'' नहीं कहा जाता। (कभी-कभी, यह हो सकता है कि प्रचारक प्राचीनों का काम करे,[15] परन्तु प्रचारक होते हुए, बाइबल के दृष्टिकोण से वह ''द पास्टर'' [अर्थात पादरी] *नहीं* है।)

नकारात्मक से सकारात्मक पहलू की ओर जाते हुए, प्रवचन बताता है कि प्रचार में क्या शामिल होना चाहिए। किसी प्रचारक को अपना समय कैसे व्यतीत करना चाहिए, और प्रचारक को क्या प्रचार करना चाहिए विषयों पर लगभग हर किसी के अपने-अपने विचार हो सकते हैं। आइए पौलुस से पूछते हैं कि ''प्रचार है क्या? तुमने इफिसुस में क्या किया?'' मैं उसे यह कहते हुए सुन कर सकता हूं, ''मैंने *प्रचार किया और सिखाया*'' (आयतें 20, 25)। पौलुस के शब्दों में उन छोटी-मोटी बातों के बारे में कुछ भी नहीं बताया गया जो आमतौर पर प्रचारकों के जीवन में कोलाहल मचाकर प्रमुख काम से उनका ध्यान हटा देती हैं।

फिर, मैं पौलुस को अपने शब्दों को विस्तार देते हुए सुन सकता हूं: ''मैंने *परमेश्वर के वचन* का प्रचार किया व शिक्षा दी।'' उसने कहा ''मैं तुम्हें परमेश्वर ... के अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है'' (आयत 32)।

पौलुस ने ज़ोर दिया कि उसने परमेश्वर के वचन से प्रचार किया और उसी में से सिखाया।[16] उसने इफिसियों को यह ज़ोर देते हुए कहा कि वह सब मनुष्यों के लहू से निर्दोष है[17] बताकर (आयत 20),[18] क्योंकि वह ''परमेश्वर की सारी मनसा को [उन्हें] पूरी रीति से बताने से न झिझका'' (आयतें 26, 27)। प्रचारक की पहली ज़िम्मेदारी परमेश्वर के प्रति है। उसका काम लोगों को प्रसन्न करना, उन्हें अच्छा अहसास दिलाना या भीड़ जुटाना नहीं, बल्कि ''परमेश्वर की सारी मनसा'' (आयत 27) का प्रचार करना है!

उसके बाद मैं पौलुस की यह कहते हुए कल्पना करता हूं, ''*जहां भी हो सकता था* मैंने परमेश्वर के वचन का प्रचार किया और सिखाया।'' वह ''लोगों के साम्हने और घर-घर'' (आयत 20) जाकर सिखाता था। जो प्रचारक यह समझता है कि उसे ''पुलपिट से ही'' बोलना चाहिए वह परमेश्वर द्वारा दी गई चुनौती के उद्देश्य को नहीं समझता।

अन्त में, मैं पौलुस को यह ऐलान करते हुए सुनता हूं, ''मैंने परमेश्वर का वचन *सब लोगों को* जहां भी मैं सिखा सकता था, प्रचार किया।'' उसने ''यहूदियों और यूनानियों के साम्हने गवाही'' दी (आयत 21)। उसने पक्षपात से काम नहीं किया। जब तक एक प्रचारक सबकी सहायता करने के लिए तैयार नहीं होता, तब तक वह किसी की भी सहायता नहीं कर सकता।

प्रचारक का व्यवहार कैसा होना चाहिए

पौलुस ने न केवल यह बताया कि एक प्रचारक को कैसा होना चाहिए; बल्कि उसने यह भी बताया कि प्रचारक को क्या अहसास होना चाहिए अर्थात उसका व्यवहार कैसा

होना चाहिए। सही कर्मों के बिना सही व्यवहार करना कठिन है।

प्रचारक का स्वभाव *विनम्र* होना चाहिए। पौलुस ने ''बड़ी दीनता से'' (आयत 19) प्रभु की सेवा की। शब्द ''मिनिस्टर अर्थात सेवक''[19] का अर्थ है ''दास।'' प्रचारक एक दास ही तो है (देखिए रोमियों 12:3; फिलिप्पियों 2:3-5)। वह पास्टर नहीं है; उसका कार्य कलीसिया को चलाना नहीं है। उसका कार्य वचन का प्रचार करना है और हर हाल में उसके लिए वचन का प्रचार करना आवश्यक है!

प्रचारक का व्यवहार *भरोसे वाला* होना चाहिए। पौलुस सिर से लेकर पांवों तक ज़ख्मी था (2 कुरिन्थियों 11:23-33)। यदि मैं उसकी जगह होता, तो कहता, ''मैंने बहुत दुख उठा लिए हैं। मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया है। अब मैं काम नहीं करूंगा।'' परन्तु, छोड़कर जाने की पौलुस की कोई योजना नहीं थी। उसे कौन सी बात ने कार्य करते रहने के लिए बाध्य किया? प्रभु में उसके भरोसे ने (आयतें 21, 32)। उसके साथ जो भी हो, उसने अपने आप को परमेश्वर के हाथों में दे दिया था! भविष्य के सम्बन्ध में उसने इफिसुस के प्राचीनों को बताया:

> और अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ[20] यरूशलेम को जाता हूं, और नहीं जानता, कि वहां मुझ पर क्या-क्या बीतेगा? केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर[21] मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार हैं। परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूं,[22] बरन यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई को पूरा करूं,[23] जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिए प्रभु यीशु से पाई है (आयतें 22-24)।

आयत 24 के आरम्भ के ये शब्द मुझे अच्छे लगते हैं: ''परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता।'' हम बहुत सी चीज़ों को कुछ ''समझते'' हैं: हमें आलोचना, मृत्यु, असफलता, बीमारी, अकेलेपन, नौकरी की असुरक्षा, भविष्य, बुढ़ापे से डर लगता है। मैं व्यक्तिगत चिन्ताओं, स्वास्थ्य समस्याओं और काम से जुड़े बोझ के बारे में बहस होने देता हूं। दूसरी ओर पौलुस ने कहा कि उसे केवल इस बात की चिन्ता थी कि परमेश्वर द्वारा दी गई आज्ञा को वह पूरा करे और अन्त तक आज्ञाकार रहे!

प्रचारक में *तरस* का व्यवहार भी होना चाहिए। प्रवचन में दो बार, पौलुस ने आंसू बहने की बात की (आयतें 19, 31)। वास्तविक मनुष्य रो सकते हैं (यूहन्ना 11:35; 2 कुरिन्थियों 2:4; फिलिप्पियों 3:18)।[24] यदि प्रचार के लिए आवश्यक बातें आपके हृदय को स्पर्श नहीं करतीं, तो प्रचारक मत बनें!

प्राचीनों के लिए एक प्रवचन

इसके बाद, हम प्राचीनों की ओर मुड़ते हैं। पहले और सर्वप्रथम, यह प्रवचन प्राचीनों के लिए था (आयत 17[25])। मैं फिर कहता हूं, कि अधिकतर लोग प्राचीन नहीं हैं, इसलिए

हो सकता है गैर प्राचीनों के साथ प्राचीनों की बात करने का महत्व न लगे। परन्तु मेरी आशा तथा प्रार्थना है, कि बहुत से लोग जो इस पाठ का अध्ययन करते हैं, प्राचीन बनने की अभिलाषा करें (1 तीमुथियुस 3:1)। फिर, मेरा मानना है कि परमेश्वर के हर बालक को पता होना चाहिए कि शास्त्र के अनुसार प्राचीन बनने के लिए कौन सी योग्यताएं होनी चाहिए।

प्राचीन होने का अर्थ क्या नहीं है

एक बार फिर, हम नकारात्मक से आरम्भ करते हैं। प्राचीन होने का प्रशंसा तथा सम्मान पाने से कुछ भी लेना-देना नहीं है। इफिसुस के प्राचीनों को दिए पौलुस के आदेश को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसमें उसने केवल *काम और ज़िम्मेदारी* की बात की। उसने एक चरवाहे के उदाहरण का प्रयोग किया। चरवाही करना गन्दा तथा बदबू वाला काम था; चरवाहे को भेड़ों के साथ रहना पड़ता था। यह एक जोखिम भरा काम था; जंगली जानवरों का भय रहता था। यह कोई आकर्षक व्यवसाय *नहीं* था।

मैं फिर कहता हूं, प्राचीन बनना धन कमाने या जीवन में आगे बढ़ने के लिए नहीं है यदि प्राचीनों को वेतन दिया जाता है तो वह शास्त्र के अनुसार है (1 तीमुथियुस 5:17, 18),[26] परन्तु धन कमाने के लिए प्राचीन बनना ठीक नहीं है। प्राचीन बनने के लिए एक योग्यता यह होनी चाहिए कि वह ''धन का लोभी न'' हो (1 तीमुथियुस 3:3; तीतुस 1:7 भी देखिए; 1 पतरस 5:2)। पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों से आग्रह किया कि वे उसकी नकल करें और ''किसी की चान्दी, सोने या कपड़े''[27] का लालच न करें (प्रेरितों 20:33; आयतें 34, 35 भी देखिए)।

फिर, प्राचीन होने का पैर जमाने और अपनी शक्ति का आधार बढ़ाने से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। बाद के वर्षों में, कलीसिया में से धर्मत्याग होने पर, कलीसिया के अगुओं में से कुछ बड़े से बड़े इलाकों पर कब्जा करने लगे। इफिसुस के प्राचीनों को इफिसुस और केवल इफिसुस की कलीसिया की निगरानी करने की ज़िम्मेदारी मिली।[28] विलियम बार्कले ने कहा, ''[प्राचीन] स्थानीय अधिकारी थे और उनका अधिकार केवल वहां तक ही सीमित था जहां पर उन्हें अलग किया गया था।''

प्राचीन होने का अर्थ क्या है

आइए अब सकारात्मक की ओर मुड़ते हैं: प्राचीन होने का अर्थ सबसे पहले एक *भला* व्यक्ति होना है, जो कि हर एक मसीही को होना चाहिए (आयत 28; 1 पतरस 5:3 भी देखिए)।

प्राचीन होने का अर्थ परमेश्वर द्वारा दी गई निश्चित *योग्यताओं का* होना है। पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को बताया कि *पवित्र आत्मा* ने उन्हें *अध्यक्ष* बनाया था (प्रेरितों 20:28)। आत्मा ने ऐसा प्राचीन बनने की योग्यताओं की रूपरेखा देकर किया (1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9)। यद्यपि प्राचीनों को सदस्यों द्वारा चुना तथा ठहराया जाता है,[29]

परन्तु उन्हें *यह* भी अहसास होना चाहिए कि उन्हें परमेश्वर का कार्य करने के लिए चुना गया है। वास्तविक अर्थ में *पवित्र आत्मा* ने उन्हें अध्यक्ष बनाया है और उनकी सबसे पहली ज़िम्मेदारी *परमेश्वर* के प्रति है (इब्रानियों 13:17)।

प्राचीन होने का अर्थ आत्मिक *रूप से परिपक्व* व्यक्ति होना है। अनुवादित शब्द ''प्राचीन'' (आयत 17) के लिए यूनानी शब्द *प्रिसबुत्रोस* है। प्राचीनों को ''प्रिसबिटर्स'' कहा जा सकता है।[30] *प्रिसबुत्रोस* का अक्षरश: अर्थ है ''बूढ़ा [आदमी]।'' आयु एक मुख्य कारक है, परन्तु अधिक महत्वपूर्ण कारक परिपक्वता है। एक प्राचीन के लिए परिपक्वता से निर्णय लेने वाला होना आवश्यक है। उसमें गम्भीर परिस्थितियों में समझ से काम लेने की योग्यता होनी चाहिए।

प्राचीन होने का अर्थ *ज़िम्मेदारी* को स्वीकार करना है।[31] पौलुस ने प्राचीनों को बताया (आयत 17) कि पवित्र आत्मा ने उन्हें ''अध्यक्ष'' ठहराया था (आयत 28)। अनुवादित शब्द ''अध्यक्ष'' का यूनानी शब्द *एपीस्कोपोस* है,[32] जो ''ऊपर'' (*एपी*) के साथ ''देखने'' (*स्कोपोस*)[33] का जोड़ है जिसका अर्थ है ''अध्यक्ष।''[34] *एपीस्कोपोस* का एक अंग्रेज़ी रूप ''बिशप''[35] है (KJV में देखिए फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:1, 2; 1 पतरस 2:25)। नये नियम के दिनों में प्राचीन होने का अर्थ बिशप होने से भिन्न नहीं था अर्थात दोनों ही शब्द अदल-बदल कर और एक ही पद के लिए प्रयुक्त होते थे (प्रेरितों 20:17, 28; तीतुस 1:5, 7; 1 पतरस 5:1, 2)।[36]

प्राचीनों को मण्डली के सम्पूर्ण कार्य की निगरानी रखनी होती थी (और है)। सरकार चलाने के सम्बन्ध में अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी त्रुमैन कहा करता था, ''यहां गाड़ी रुक गई।''[37] स्थानीय मण्डली के काम के सम्बन्ध में प्राचीनों पर आकर ''गाड़ी रुक जाती है।'' परन्तु, प्राचीन अपने काम को करने के लिए सहायता ले सकते हैं। हमारे पाठ में इस बात का प्रमाण है: प्राचीनों ने ''कलीसिया की रखवाली'' करनी होती थी (आयत 28), अर्थात उनका काम सदस्यों को सिखाकर आत्मिक भोजन देना था (इब्रानियों 5:12-14) साथ ही, पौलुस ने कहा कि *उसने* इफिसुस के मसीहियों को सिखाया (प्रेरितों 20:20) क्या पौलुस ने प्राचीनों के काम में हस्तक्षेप किया? नहीं, उसने तो केवल सिखाने के महान कार्य में उनको सहयोग दिया। यह वचन के अनुसार, आवश्यक है कि प्राचीन विभिन्न ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए लोगों की सहायता लें (जैसे अध्याय 6 में प्रेरितों ने भी किया[38])। साथ ही, प्राचीनों को यह भी स्मरण रखना चाहिए कि मण्डली की निगरानी के लिए वे और केवल वे ही ज़िम्मेदार हैं और एक दिन उनकी अध्यक्षता का उनसे हिसाब मांगा जाएगा[39] (इब्रानियों 13:17)!

सबसे बढ़कर, प्राचीन होने का अर्थ *चरवाही करना* है। प्रवचन में अधिकतर जिस चित्र का इस्तेमाल किया गया है वह झुंड की चिन्ता करने वाला एक विवेकी चरवाहा है। प्राचीनों को दिए पौलुस के आदेश का सार 28 और 29 आयतों में मिलता है:

> इसलिए अपनी[40] और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस में पवित्र आत्मा ने तुम्हें

अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो,[41] जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है।[42] मैं जानता हूं, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे।

अनुवादित शब्द ''रखवाली करो'' ''चरवाहे'' के लिए यूनानी शब्द *पोयमैन* का क्रिया रूप है। इस शब्द का लातीनी रूप ''पास्टर'' है जिसे इफिसियों 4:11 में कलीसिया के अगुओं की सूची में डाला गया (हिन्दी की बाइबल में रखवाला) है। ध्यान दें कि प्रेरितों 20 में ''प्राचीन'' = ''बिशप'' = ''पास्टर'' है।[43] प्राचीन (प्रचारक नहीं) झुंड के चरवाहे अथवा रखवाले/पास्टर्स होते थे। वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे ने लिखा:

> प्राचीन/बिशप्स (ऐल्डर्स), झुंडों के ''पास्टर्स (चरवाहे)'' थे जिनकी सहायता के लिए डीकन्ज़ होते थे। ... नये नियम की कलीसियाओं में तीन पद ऐल्डर, बिशप तथा पास्टर पर्यायवाची थे। 1 तीमुथियुस 3:1-7 और तीतुस 1:5-9 में इस पद के लिए योग्यताएं दी गई हैं।

प्राचीनों के काम को एक शब्द में बताने के लिए सबसे अच्छा शब्द ''चरवाही करना'' है। यदि आप यह जानना चाहते हैं कि एक प्राचीन को किन प्रयासों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, तो एक चरवाहे की ज़िम्मेदारियों पर विचार कीजिए: वह भेड़ों के आगे चलता था। वह देखता था कि क्या उन्हें भोजन मिल गया।[44] वह उनके घावों का उपचार करता और उन्हें बांधता था। वह उन्हें भटकने से बचाने की कोशिश करता, और यदि वे भटक जातीं तो उन्हें ढूंढ़कर लाता था। फिर, यह सब उसे बिना पक्षपात के करना होता था। पौलुस ने कहा, ''... *पूरे* झुंड की चौकसी करो'' (आयत 28)। हमें इस पाठ में पहले प्रयुक्त हुए एक वाक्यांश की नकल करनी चाहिए: जो व्यक्ति *पूरे* झुंड को चराने के लिए तैयार नहीं है, वह झुंड में से *किसी* को भी चराने के योग्य नहीं है।

पौलुस ने चरवाही करने के एक अत्यावश्यक काम अर्थात *झुंड की रखवाली* पर ज़ोर दिया। उसने प्राचीनों को बताया कि वे चौकस रहें क्योंकि ''फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे जो झुंड को न छोड़ेंगे'' (आयतें 28, 29)।[45] बाइबल के भीतर तथा बाहर के इतिहास से पता चलता है कि इफिसुस में वे, ''भेड़िए'' ''झुंड'' में प्रवेश कर गए थे, और वे भेड़िए कोई और नहीं बल्कि अगुओं में से ही उठने वाले लोग थे, जिन्होंने ''चेलों को अपने पीछे खींच लेने के लिए टेढ़ी-मेढ़ी बातें कीं'' (आयत 30)। नया नियम इफिसुस से जुड़े छह झूठे शिक्षकों की बात करता है।[46] यूहन्ना के लेखों से हमें पता चलता है कि बाद में नॉस्टिकवाद (अर्थात प्रज्ञानवाद)[47] की बुराइयों के कारण इफिसुस में यह समस्या आई होगी। अन्ततः साधारण लोगों का धर्मत्याग हुआ (1 तीमुथियुस 4:1-5; 2 तीमुथियुस 3:3; 4:3, 4)। (जैसे कि आमतौर पर कहा जाता है, ''पोप उन भटक जाने वालों में से एक प्राचीन है।'') कलीसिया के अन्दर हो या बाहर, प्राचीनों को झूठी शिक्षा के बारे में

सतर्क रहना चाहिए।

प्राचीन बनने की अन्य चुनौतियों का भी उल्लेख किया जा सकता है: कि प्राचीन बनने का सम्बन्ध कलीसिया से प्रेम है (आयत 28)। यीशु कलीसिया के लिए मर गया। एक अच्छा प्राचीन कलीसिया की हानि के लिए कुछ भी नहीं करेगा; वह उसके लिए दुख उठाने को तैयार होगा। फिर, प्राचीन होने के लिए परमेश्वर के वचन का ज्ञान होना आवश्यक है (आयत 32)। पौलुस और आत्मा की प्रेरणा पाए अन्य लोगों के चले जाने पर उन्हें कैसे पता चलता कि उन्हें क्या करना चाहिए? पौलुस ने उनका ध्यान वचन की ओर दिलाया। एक प्राचीन के लिए ''सिखाने में निपुण'' होना आवश्यक है (1 तीमुथियुस 3:2)।

प्राचीन होना अन्ततः लोगों की सहायता के लिए है। समाप्त करने के लिए आयत 32 एक अच्छी टिप्पणी होगी: ''और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं;[48] जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है।'' परन्तु, पौलुस ने अपनी बात समाप्त नहीं की थी। उसने आगे कहा:

> मैंने किसी की चान्दी, सोने या कपड़े का लालच नहीं किया। तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएं पूरी कीं। मैंने तुम्हें सब कुछ करके दिखाया, कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को सम्भालना,[49] और प्रभु यीशु की बातें स्मरण रखना अवश्य है, कि उसने आप ही कहा; कि लेने से देना धन्य है[50] (आयतें 33-35)।

कोई चाहे प्राचीन, डीकन, प्रचारक या किसी अन्य ढंग से अगुआ हो, अन्त में लोगों की सहायता के लिए आत्मिक अगुआई देने वाले नीचे ही आते हैं।

अन्य पापियों के लिए एक प्रवचन

अन्त में, मैं अपने पाठ में से कलीसिया के शेष सदस्यों के लिए शिक्षाओं की ओर आता हूं। बहुत सी प्रासंगिकताएं जो प्राचीनों तथा प्रचारकों के लिए बनाई गई हैं, हम में से किसी पर भी बनाई जा सकती हैं; एक प्रकार से हम सभी ''अगुवे'' हैं, क्योंकि हर कोई दूसरों को प्रभावित करता है। इसलिए हम सभी को परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना चाहिए (आयत 32); हम सभी को वचन के सिखाने वाले होना चाहिए (आयत 20); हम सभी में सेवकों के मन होने चाहिए; हम सभी को निःस्वार्थ भावना से दूसरों की चिन्ता करनी चाहिए (आयत 35)।

फिर, इस पद में हमें वह सब कुछ सीखने को मिलता है जो प्रचारकों और प्राचीनों में देखना चाहिए अर्थात हमें ऐसे प्रचारकों की आवश्यकता है जो सच्चाई का प्रचार करें, जो हमें वे बातें बताएं जिनकी हमें आवश्यकता है (वह नहीं जो हम सुनना चाहते हैं), और जो ऐसा तरस की भावना से करें। हमें ऐसे प्राचीनों की आवश्यकता है जो परिपक्व, चरवाहे के मन वाले ज़िम्मेदार लोग हों।

सबसे महत्वपूर्ण, मैं चाहता हूं कि हम सभी इस पद में से सम्बन्धों के भेद को विशेषकर कलीसिया में सम्बन्धों को समझ लें। इस कहानी को पूर्णता देने के लिए इस पद में जो शब्द नहीं है, वह है ''प्रेम।'' पौलुस ने इफिसुस में संदेशवाहक को इसलिए नहीं भेजा कि वह उनकी लीडरशिप-ट्रेनिंग की क्लास लेना चाहता था, और प्राचीनों ने आने-जाने में साठ मील की यात्रा इसलिए नहीं की कि उन्हें लगता था कि पौलुस लीडरशिप की तकनीकों में निपुण होगा। पौलुस के प्रवचन के बाद भावनाओं से भरे दृश्य में दिखाई देता है कि पौलुस ने उन प्राचीनों को क्यों बुलवाया और वे क्यों आए: उनका आपस में विशेष सम्बन्ध था।

> यह कहकर उसने घुटने टेके और उन सब के साथ प्रार्थना की। तब वे सब बहुत रोए और पौलुस के गले लग कर उसे चूमने लगे।[51] वे विशेष करके इस बात का शोक करते थे, जो उसने कही थी, कि तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे;[52] और उन्होंने उसे जहाज तक पहुंचाया (आयतें 36-38)।

उन्होंने ''घुटने टेके।'' ''प्रार्थना में घुटने टेकने'' की बात हम इतनी बार कर चुके हैं कि हमें लग सकता है कि बाइबल के समय में प्रार्थना करने का यह सबसे अधिक प्रचलित ढंग था, परन्तु सामान्यत: प्रार्थना करते समय लोग खड़े रहते थे। पवित्र शास्त्र में प्रार्थना करते हुए लोगों को घुटने टेकते हुए देखकर कई बार उनमें दोषी होने की या निरुपाय होने की भावनात्मक स्थिति मिलती है। मिलेतुस में, प्राचीन शोक में डूबे हुए थे। रोने, पौलुस के गले मिलने और बार-बार उसे चूमने के बाद वे उसे वहां से जाता देखने के लिए जहाज़ तक गए। अध्याय 21 की पहली आयत की मूल भाषा से संकेत मिलता है कि पौलुस और दूसरे लोगों को भाइयों से दूर *होना था* (देखिये NIV)। मैं उन प्राचीनों को एड़ियां उठा उठाकर आंखों से ओझल होने तक जहाज़ की ओर हाथ दिखाते हुए देख सकता हूं।

पौलुस और इफिसुस के प्राचीनों के बीच एक विशेष बन्धन था। प्राचीनों तथा प्रचारकों को एक-दूसरे की परवाह करनी चाहिए। फिर यह सम्बन्ध प्रचारक से सदस्य, प्राचीन से सदस्य और सदस्य से सदस्य के सम्बन्ध तक फैलना चाहिए! मैं सभी प्रचारकों से कहूंगा: प्रत्येक सदस्य का आदर करें और अपने प्राचीनों का आदर करें। मैं सभी प्राचीनों से कहूंगा: अपने प्रचारक का समर्थन करें और प्रत्येक सदस्य के साथ कोमलता से पेश आएं। मैं प्रत्येक सदस्य से कहूंगा: याद रखें कि प्राचीनों तथा प्रचारक का काम हो रहा है और अपने आप से पूछें, ''मेरे कारण क्या वे कार्य आसान हुए हैं या कठिन?''

कलीसिया में दिल से दिल की बात कहना मुझे अच्छा लगता है, इससे बहुत सी समस्याएं सुलझ जाएंगी!

सारांश

मैंने इस पाठ के शीर्षक में ''पापियों'' शब्द का प्रयोग इसलिए किया है क्योंकि हम

में से कोई भी वैसा नहीं है जैसा हमें होना चाहिए (रोमियों 3:23)। परमेश्वर की सहायता से, हम सब अच्छा कर सकते हैं, परन्तु इसके साथ ही आइये एक-दूसरे के साथ सहनशीलता भी दिखाएं!

आइये सम्बन्धों पर चर्चा करते हुए इस पाठ को समाप्त करते हैं। कलीसिया के दूसरे सदस्यों के साथ आप का सम्बन्ध कैसा है? क्या पौलुस की तरह छोड़कर जाने पर आपके लिए कोई रोयेगा? इससे भी बड़ी बात, प्रभु के साथ आपका सम्बन्ध कैसा है? क्या आप उस कलीसिया के भाग हैं जिसके लिए वह मरा (आयत 28)? पौलुस ने इफिसुस में मन फिराव तथा विश्वास का प्रचार किया (आयत 21)। ''मन फिराना'' का अर्थ है अपने पापों पर पछताना और अपने मार्ग बदलने का निश्चय करना। ''विश्वास'' प्रभु की बात पूरी तरह मानना है जिसमें बपतिस्मा लेना भी शामिल है (इफिसियों 4:5)। क्या आप प्रभु पर इतना भरोसा करते हैं कि आप उसकी इच्छा को पूरा कर सकें (मरकुस 16:16)? यदि मनुष्यों या प्रभु के साथ सम्बन्ध सुधारने की आपको आवश्यकता है, तो उस सम्बन्ध को सुधारने का वह समय *अभी* है!

विज़ुअल-एड नोट्स

अपने सुनने वालों के मनों में इस मुख्य जानकारी का प्रभाव डालने के लिए आप को प्राचीनों के लिए बाइबल के विभिन्न शब्दों पर चार्ट का प्रयोग करना चाहिए। चार्ट कुछ इस प्रकार का हो सकता है:

<u>प्रभु की कलीसिया में प्राचीन (ऐल्डर्ज़)</u>
ऐल्डर्ज़ (प्राचीन)/प्रिसबिटर्ज़-बूढ़े तथा अधिक परिपक्व
(1 तीमुथियुस 5:17; 1 पतरस 5:5)
बिशप्स (अध्यक्ष)/ओवरसियर्ज़-मंडली की ज़िम्मेदारी
(फिलिपियों 1:1)
पास्टर्ज़/शैफर्ड्ज़/चरवाहे-सदस्यों की आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करना
(1 पतरस 5:2, 3)

प्रवचन नोट्स

विलियम बार्कले के अनुसार, ''इस प्रकार की भावनाओं से भरे हुए विदायगी प्रवचन का अच्छी तरह विश्लेषण करना सम्भव नहीं है।'' परन्तु, यह प्रवचन स्वयं ही अपने आपको दो भागों में बांट लेता है: पौलुस का अपने काम का हवाला (आयतें 18-27) और प्राचीनों के लिए उसकी आज्ञा (आयतें 28-35)। एक-एक आयत पर विचार करने के

बजाय, मैंने इस सामग्री को विषय के अनुसार लिया है। परम्परागत ढंग से अध्ययन करने वालों के लिए मैंने पाद टिप्पणियों में नोट्स शामिल किए हैं। वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे ने इस सामग्री की रूप रेखा इस प्रकार से दी :

I. अतीत की समीक्षा (20:18-21)।
   क. पौलुस की सेवकाई का ढंग (आयतें 18, 19)।
   ख. पौलुस की सेवकाई का उद्देश्य (आयत 19)।
   ग. पौलुस की सेवकाई का संदेश (आयतें 20, 21)।

II. वर्तमान की गवाही (20:22-27)। (पौलुस ने छह चित्रों का प्रयोग किया: लेखाकार, धावक, भंडारी, गवाह, संदेश देने वाला और चौकीदार।)

III. भविष्य की चेतावनी (20:28-38)।
   क. हमारे आसपास का खतरा (आयत 29)।
   ख. हमारे बीच रहने वालों का खतरा (आयत 30)।
   ग. हमारे अन्दर का खतरा (आयतें 31-35)।

इस प्रवचन की सामग्री दो या इससे अधिक प्रवचनों के लिए लाभदायक हो सकती है। एक प्रवचन प्राचीनों तथा उनकी जिम्मेदारियों पर हो सकता है। होने वाले धर्मत्याग सम्बन्धी पौलुस की चेतावनी देने के लिए एक अलग प्रवचन हो सकता है (आयतें 28-31)। यह इतिहास की बात है कि अपनी सीमाओं को लांघने पर धर्मत्याग का आरम्भ कलीसिया के अगुओं से ही हुआ। धर्म त्याग से सम्बन्धित अन्य भविष्यवाणियों के लिए, देखिये मत्ती 7:15-23; 2 कुरिन्थियों 11:3; 2 थिस्सलुनिकियों 2:1-12; 2 पतरस 2:1-3; 3:1-7; प्रकाशितवाक्य 17:3-6; 18:1-5.

पादटिप्पणियां

[1]यदि 14:14-18 को शामिल कर लिया जाए, तो प्रेरितों के काम में आठ प्रवचन दर्ज हैं। ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' में ''पूजा से गालियों तक'' पाठ में प्रेरितों 14:14-18 पर नोट्स देखिये। [2]बाद में रोम की कैद से छूटने के बाद, पौलुस त्रोआस में दोबारा गया (2 तीमुथियुस 4:13)। कई लोगों का अनुमान है कि वह वहां गिरफ्तार हो गया था। [3]अस्सुस तथा पाठ में दिये गए अन्य स्थानों को देखने के लिए पृष्ठ 184 पर मानचित्र देखिये। अस्सुस त्रोआस से थल मार्ग से लगभग बीस मील और जल मार्ग से चालीस मील दूर प्रायद्वीप के सामने था। [4]इसकी तुलना मरकुस 6:45, 46 में यीशु के कार्यों से कीजिये। पिछली रात पौलुस सो नहीं पाया था, इसलिए जहाज़ पर सोने के बजाय बीस मील पैदल चलने का उसके पास शक्तिशाली कारण था। [5]पौलुस ऐसे जहाज़ में बैठा था जो बहुत से नगरों में रुका था (उस लोकल गाड़ी की तरह जो लगभग हर कस्बे में रुकती है)। बाद में, वह ऐसे जहाज़ में बैठा जो बहुत कम जगहों पर रुकता था (21:2; एक्सप्रेस गाड़ी की तरह)। [6]मितुलेने लिसबोस टापू के दक्षिण पूर्वी किनारे पर एक बन्दरगाह थी। [7]खियुस और सामुस दो टापू

थे। [8]वैस्टर्न टेक्सट में यहां ''और ट्रोगिलियुम में रुके'' जोड़ा है (देखिये KJV)। [9]मिलेतुस एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह थी। इफिसुस के निकट होने के कारण यह देखने में छोटी लगती थी, परन्तु यह एक विशाल तथा महत्वपूर्ण नगर था। [10]निस्संदेह पौलुस इफिसुस में जाना चाहता होगा, परन्तु यदि पिन्तेकुस्त के दिन तक उसे यरूशलेम में पहुंचना था, तो उसके पास रुकने का समय नहीं था: (1) स्पष्टतः, जिस जहाज़ पर पौलुस बैठा था वह इफिसुस में नहीं रुकता था। इफिसुस में रुकने के लिए, पौलुस को खियुस में उतरकर, इफिसुस जाने वाली कोई किश्ती लेकर, वहां से होकर फिर यरूशलेम जाने वाले किसी दूसरे जहाज़ को ढूंढ़ना पड़ना था। (2) पौलुस के लिए इफिसुस से जल्दी निकलना असम्भव होगा। वहां पर उसके बहुत से मित्र थे और पूर्व के लोग आतिथ्य कई प्रकार के भोजों तथा जश्न के साथ करते थे। (3) पौलुस किसी और दंगे में भी फंस सकता था इसलिए वह एक दंगे के तुरन्त बाद वह इफिसुस से निकल गया था [20:1])।

[11]पौलुस पर्व के दिन यरूशलेम में रहना चाहता होगा। पहले ही फसह के दिन वह वहां नहीं था (20:6) और पिन्तेकुस्त के दिन तक एक तिहाई समय निकल गया था, सो उसे लगा कि उसे जल्दी जाना चाहिए। पौलुस पिन्तेकुस्त के दिन वहां क्यों पहुंचना चाहता था? पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में रहने के पौलुस के कई कारण हो सकते हैं (दूर-दूर से आये मित्रों से मिलना, अपनी यहूदी धरोहर को मनाना, प्रचार के लिए मिले अवसर का लाभ उठाना आदि); परन्तु वह यरूशलेम में वहां के निर्धनों के लिए चंदा इकट्ठा करने जा रहा था, इसलिए उसका मुख्य उद्देश्य उस चंदे से ही जुड़ा हुआ था। अधिक से अधिक लोगों को इस चंदे के बारे में पता चलने से इसका और अधिक प्रभाव होता; और सारे यहूदिया से आये यहूदी मसीही इस चंदे को और आसान कर देते। [12]सम्भवत: वह उनके यहां नहीं गया क्योंकि उसके आने तक जहाज़ निकल सकता था। यदि प्राचीनों के आने से पहले जहाज़ निकल जाता, तो उन्हें तकलीफ होती; परन्तु यदि पौलुस से जहाज़ छूट जाता, तो पर्व के लिए यरूशलेम जाने के लिए उसके पास कोई अन्य साधन नहीं होता। [13]जो लोग प्रचारक नहीं हैं उन्हें पता होना चाहिए कि उन्हें प्रचारकों से क्या अपेक्षा करनी चाहिए, और उन्हें सचेत प्रचारक के काम की प्रशंसा करनी चाहिए। [14]इससे एक वर्ष पूर्व, पौलुस ने अपने ऊपर आए जोखिमों के बारे में बताते हुए 2 कुरिन्थियों 11:23-33 लिखा था। [15]प्राचीनों के पास प्रचारकों को ''हायर और फायर'' अर्थात नियुक्त करने तथा पदच्युत करने का अधिकार है, इसलिए प्राचीनों में से एक के प्रचारक के रूप में सेवा करने से एक-दूसरे की रुचियों से मुश्किल आ सकती है। कई प्रचारक आत्मिक रूप से इतने परिपक्व होते हैं कि वे इस स्थिति से निपट सकते हैं; जबकि बहुत से ऐसा नहीं करते। [16]विशेष रूप से जिन विषयों का उल्लेख किया गया है उनमें मन फिराना और विश्वास (आयत 21), सुसमाचार (आयत 24), अनुग्रह (आयत 24), और राज्य/कलीसिया (आयत 25) शामिल थे। बल्कि मन फिराने को पहले और विश्वास को दूसरे स्थान पर लाना तो असामान्य है (आयत 24)। साधारणत: लोग पहले यीशु में विश्वास लाते हैं और फिर मन फिराते हैं (प्रेरितों 2:37, 38)। परन्तु, याद रखिये कि पौलुस ने मुख्य रूप से इफिसुस में मूर्तिपूजकों के बीच प्रचार किया था। पहले उसने उन्हें ''मूर्तों से परमेश्वर की'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:9) तरफ मोड़ना था, जिसमें ''*परमेश्वर की ओर* मन फिराना'' (आयत 21) शामिल था। फिर वह उन्हें यीशु के विषय में सिखा सकता था, ताकि वे ''हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास'' कर लेते (आयत 21)। [17]यह भाषा यहेजकेल 3:16-21; 33 :1-9 से ली गई है। NCV अनुवाद में है ''यदि तुम में से किसी का नाश होता है, तो मैं उसका जिम्मेदार नहीं हूं।'' ''मत डर'' पाठ में प्रेरितों 18:6 पर नोट्स देखिये। [18]यूनानी शब्द जिनका अनुवाद ''से कभी न झिझका'' का इस्तेमाल नाविक यह करने के लिए करता था कि ''मैंने अपनी पाल नीचे नहीं की।'' प्रचार के सम्बन्ध में, पौलुस के साथ ''आगे तीव्रगति!'' जुड़ा हुआ था। [19]आयत 24 में पौलुस ने अपनी ''सेवकाई'' की बात की। [20]बहुत से अंग्रेजी अनुवादों में आत्मा के लिए ''spirit'' का पहला अक्षर बड़ा ''S'' यह संकेत देने के लिए दिया गया है कि उनका मानना है कि पौलुस पवित्र आत्मा की बात कर रहा था। NCV में ''मैं पवित्र आत्मा की आज्ञा मानकर यरूशलेम में जाऊंगा'' है। छोटे ''s'' या बड़े ''S'' का मुख्यत: एक ही अर्थ है: पौलुस ने ''[अपनी] आत्मा में ठाना कि ... यरूशलेम को जाऊं'' (19:21), कोई संदेह नहीं कि यह इसलिए था क्योंकि वह मानता था कि यह *परमेश्वर की* इच्छा थी। इसलिए, उसने उस लक्ष्य को पाने के लिए समर्पित होकर जाने की ठान ली थी, और किसी भी बाधा को

रास्ते में नहीं आने देना था।

[21]पवित्र आत्मा पौलुस से सीधे बात कर सकता था (जैसे उसने फिलिप्पुस के साथ की [8:29]), परन्तु ''हर नगर में'' का संकेत सम्भवत: यह है कि पवित्र आत्मा ने उन नगरों में उसके साथ भविष्यवक्ताओं के द्वारा बात की (देखिये 21:10, 11)। [22]देखिये मत्ती 16:25; मरकुस 8:35; लूका 9:24; फिलिप्पियों 1:23। [23]पौलुस ने अन्तत: अपनी दौड़ पूरी कर *ली* (2 तीमुथियुस 4:7)। [24]अमेरिका में, इस पंक्ति का इस्तेमाल ऐसे हो सकता है: ''जॉन वेयन ने द्वितीय विश्व युद्ध जीता हो सकता है, परन्तु उसमें एक प्रचारक या प्राचीन बनने की लालसा नहीं होगी क्योंकि वह कभी चिल्लाया नहीं।'' [25]ध्यान दें कि इफिसुस की कलीसिया में प्राचीनों की *बहुसंख्या* थी। नये नियम में एक मंडली की निगरानी के लिए *एक* प्राचीन/बिशप/पास्टर की बात कहीं नहीं मिलती। [26]मैं अपने जीवनकाल में वेतन पाने वाले बहुत कम प्राचीनों को जानता हूं। प्राचीनों की जिम्मेदारी इतनी जरूरी है और उन्हें इतना समय चाहिए, इसलिए कलीसिया को पूरा समय काम करने वाले और प्राचीनों की आवश्यकता है। [27]पहली शताब्दी में ये सब प्रतिष्ठा के प्रतीक थे। बहुत सी जगहों पर आज भी ऐसा ही है। [28]नये नियम का सही ढंग है। देखिए फिलिप्पियों 1:1; 1 पतरस 5:2। [29]प्रेरितों 6 का अध्ययन करते समय, हमने ध्यान दिया था कि आत्मा की प्रेरणा प्राप्त प्रेषितों ने अगुओं की आवश्यक योगयताएं बताईं और फिर मण्डली से कहा कि इन योग्यताओं वाले पुरुषों को अपने बीच में से चुन लें । ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में ''अच्छे अगुओं की अत्यधिक आवश्यकता'' पाठ में प्रेरितों 6:1-7 पर नोट्स देखिए। [30]साम्प्रदायिक नाम ''प्रिस्बिटेरियन'' का उदय यहीं से हुआ। निश्चय ही, कलीसिया में सरकार की तरह पदनाम नहीं होने चाहिए।

[31]परमेश्वर जब मनुष्य को कोई ज़िम्मेदारी देता है, तो उस जिम्मेदरी को पूरा करने लिए वह उसे अधिकार भी देता है। इसलिए, ''अध्यक्ष'' शब्द में न केवल जिम्मेदारी ही बल्कि अधिकार भी सम्मिलित है। [32]साम्प्रदायिक नाम ''एपिस्कोपेलियन'' का उदय यहीं से हुआ। पादटिप्पणी क्रम। [33]''टेलीस्कोप'' (दूर तक देखना), ''माइक्रोस्कोप'' (छोटा देखना), आदि की तरह ''स्कोप'' का यही अर्थ है। [34]हिन्दी की बाइबल में एपिस्कोपोस का अनुवाद ''अध्यक्ष'' हुआ है। [35]कैथोलिक और कई अन्य साम्प्रदायिक कलीसियाओं ने ''बिशप'' शब्द का इतना दुरुपयोग किया है कि बहुत से लोगों को इसका अर्थ मूल भावना वाला ''एक स्थानीय मण्डली के अध्यक्षों में से एक'' नहीं लगता। इस बात की तरफ ध्यान दिलाने का महत्व है कि मूल रूप में ''बिशप'' शब्द का अर्थ वह नहीं था जो आज समझा जाता है। [36]मैं ''पद'' शब्द का इस्तेमाल कर रहा हूं, क्योंकि NASB के अनुवादकों ने (1 तीमुथियुस 3:1) इसके लिए ''ऑफिस'' का प्रयोग किया और मेरे पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है। परन्तु ध्यान रखें कि हम ओहद की नहीं जिम्मेदारी की बात कर रहे हैं। [37]अमेरिकन लोगों में इस तरह की एक अभिव्यक्ति है, ''passing the buck'' अर्थात गाड़ी निकलना, जिसका अर्थ जिम्मेदारी से बचने का प्रयास है। ''The buck stops here'' ''गाड़ी यहां रुकती है'' का अर्थ जिम्मेदारी को स्वीकार करना है। [38]''प्रितों के काम, भाग-2'' में ''जब वस्तुएं दरारों में से गिरती हैं'' पाठ में 6:2 पर नोट्स देखिए। [39]''अध्यक्षता'' लातीनी भाषा से लिया गया है और इसका अर्थ है ''निरीक्षण।'' ऐल्डरों को आत्मिक ''निरीक्षक'' कहा जा सकता है। [40]कलीसिया की सम्भाल करने से पहले प्राचीनों को अपनी सम्भाल करनी आवश्यक है।

[41]प्रेरितों के काम में केवल यहीं पर ''परमेश्वर की कलीसिया'' शब्द मिलता है, परन्तु यह वाक्य पौलुस का पसंदीदा था (उदाहरण के लिए 2 कुरिन्थियों 1:2)। इस आयत में ''परमेश्वर'' सम्भवत: यीशु को कहा गया है (अगली पाद टिप्पणी देखिए)। [42]शास्त्र में यहां पर ''उसके अपने के लहू से'' (अर्थात, उसके अपने पुत्र), हो सकता है, परन्तु NASB की तरह हिन्दी का अनुवाद भी अति स्वाभाविक है। नए नियम में दस या अधिक में से एक बार यहां पर यीशु को ''परमेश्वर'' के रूप में दिखाया गया है। शिक्षा सम्बन्धी क्रूस के महत्व पर प्रेरितों के काम में आयत 28 सबसे बढ़िया वाक्य है। लहू के द्वारा उधार पाने के लिए, हमारे लिए लहू से खरीदी कलीसिया में होना आवश्यक है (इफिसियों 5:23, 25 भी देखिए)। [43]एक और पद के लिए जहां तीनों शब्द अदल-बदल कर इस्तेमाल हुए हैं, देखिए 1 पतरस 5:1, 2। [44]प्रेरितों 20:28

और 1 पतरस 5:2 से KJV में ''रखवाली'' के स्थान पर ''भोजन कराना'' है। चरवाहे की जिम्मेदारी का यह अनिवार्य भाग था, परन्तु यह सारी जिम्मेदारी नहीं थी ।[45]देखिए मती 7:15, यूहन्ना 10:12। [46]हुमनियुस और सिकन्दर (1 तीमुथियुस 1:19, 20); फूगिलस और हिरमुगिनेस (2 तीमुथियुस 1:15) फिलेतुस (2 तीमुथियुस 2:17) और दियुत्रिफेस (3 यूहन्ना 9) झूठे शिक्षक थे।[47]''नॉस्टिकवाद'' अर्थात प्रज्ञानवाद दूसरी व तीसरी शताब्दी में यहूदियत तथा मूर्तिपूजक फिलॉसफियों के मिश्रण से हुआ मसीहियत का बिगड़े हुए रूप का नाम था। यह नाम ''ज्ञान'' के लिए यूनानी शब्द (ग्नॉसिस) से निकला है, क्योंकि अगुओं ने उस ज्ञान को पाने का दावा किया जो शिक्षा न पाने वाले लोगों के पास नहीं थी। इस विधर्म का आरम्भ पहली शताब्दी के अंत में ही हो गया था, इफिसुस में निकुलाइयों की शिक्षा (प्रकाशित वाक्य 2:1, 6; 15 भी देखिए) सम्भवत: नॉस्टिकवाद का शुरुआती रूप था। नॉस्टिकवाद के बारे में और जानने के लिए, 1 यूहन्ना पर स्टैंडर्ड कमैन्ट्री का परिचय पढ़िए। [48]NCV बाइबल में है ''मैं तुम्हें परमेश्वर के हाथ सौंप रहा हूं।'' [49]इफिसियों 4:28 के साथ तुलना कीजिए। [50]यह ''उसके मुंह से निकले स्वर्गीय सच्चाई के उन अनमोल मोतियों में से एक है, जो सुसमाचार की पुस्तकों में नहीं लिखे गए'' (जे.डब्ल्यू. मैक्गार्वे)। (देखिए यूहन्ना 20:30।) पौलुस ने कई वर्ष पूर्व यूहन्ना के लिखे सुसमाचार से यीशु को उद्धृत किया। मन परिवर्तन के पश्चात पौलुस को प्रभु की ओर से सीधे प्रकाशन मिला था (गलतियों 1:11, 12, 17)। ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में ''मसीह में बालकों के लिए प्रौढ़ परामर्श'' पाठ में पृष्ठ 121 से 123 पर नोट्स देखिए।

[51]उन दिनों अभिनन्दन (या विदाई) के लिए चुम्बन एक साधारण ढंग था; इसका अर्थ मित्रता होता था (देखिए लूका 22:47, 48; रोमियों 16:16)। [52]आयत 25 देखिए। पौलुस के वाक्य कि ''तुम मेरा मुंह न देखोगे'' किसी थोड़ी कठिनाई के बारे में बताता है, क्योंकि बाद में पौलुस इफिसुस में फिर गया होगा। (1 तीमुथियुस 1:3; 3:14)। इन पर विचार कीजिए (1) पौलुस ने स्पष्ट कहा था कि उसे नहीं मालूम कि यरूशलेम में उसके साथ क्या होगा (पद 22), इसलिए उसने शब्द सम्भवत: उस ईश्वरीय चेतावनी से कि ''बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार है'' का अपना ही निष्कर्ष निकाल लिया होगा। पौलुस को लगा था कि यरूशलेम में उसकी मृत्यु हो जाएगी। (पद 24)। ऐसा नहीं होने पर उसने तुरन्त रोम जाने और वहां से अपना कार्य चलाने की योजना बनाई (रोमियों 15:23-25)। कुछ भी हुआ हो, उसे इफिसुस में दोबारा जाने की उम्मीद नहीं थी। (2) इफिसुस में गए उसे कई वर्ष बीत चुके थे, इसलिए सम्भवत: वे प्राचीन (यदि वह गया) तब तक किसी और जगह चले गए होंगे, या मर गए होंगे, सो उसने उनका मुंह फिर नहीं देखा। (3) प्रभु तथा परिस्थितियों ने प्राय: पौलुस का मार्ग-निर्देशन अपने ढंग से बदल दिया।

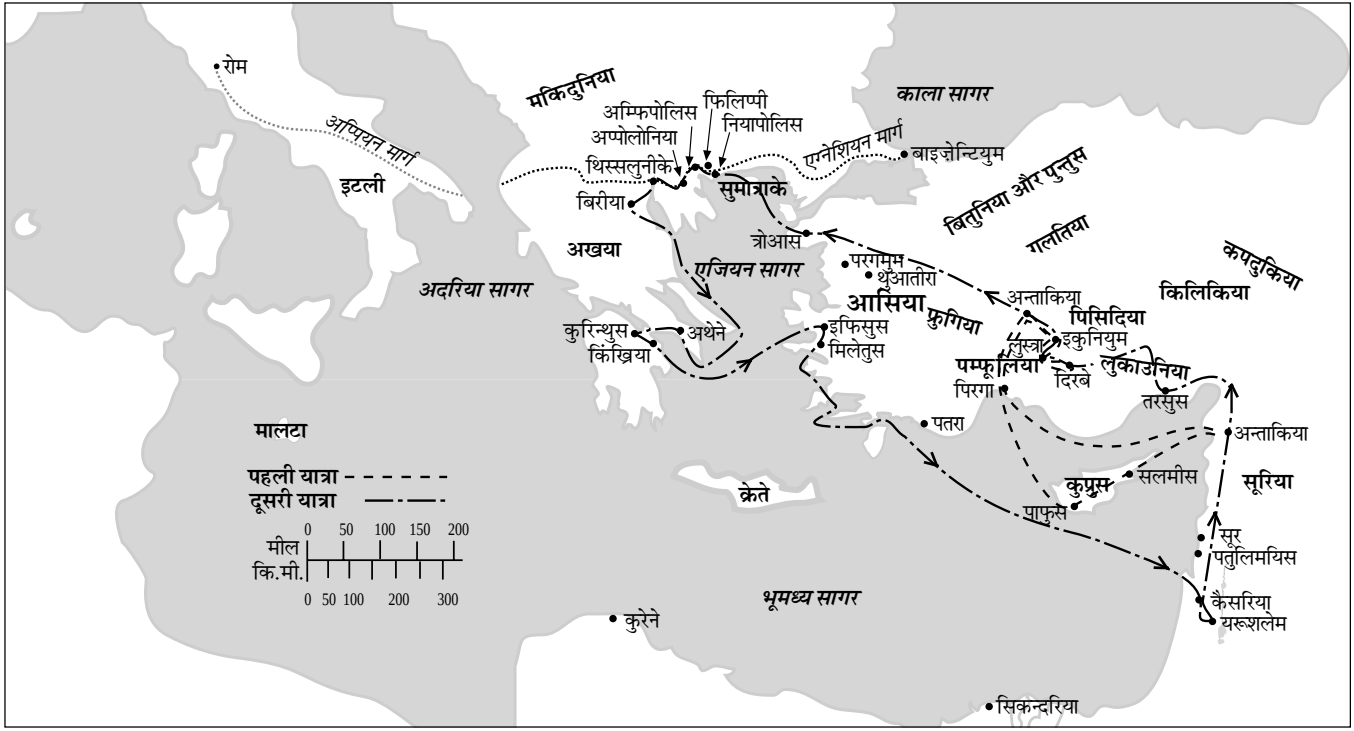

पौलुस की पहली और दूसरी मिशनरी यात्राएं

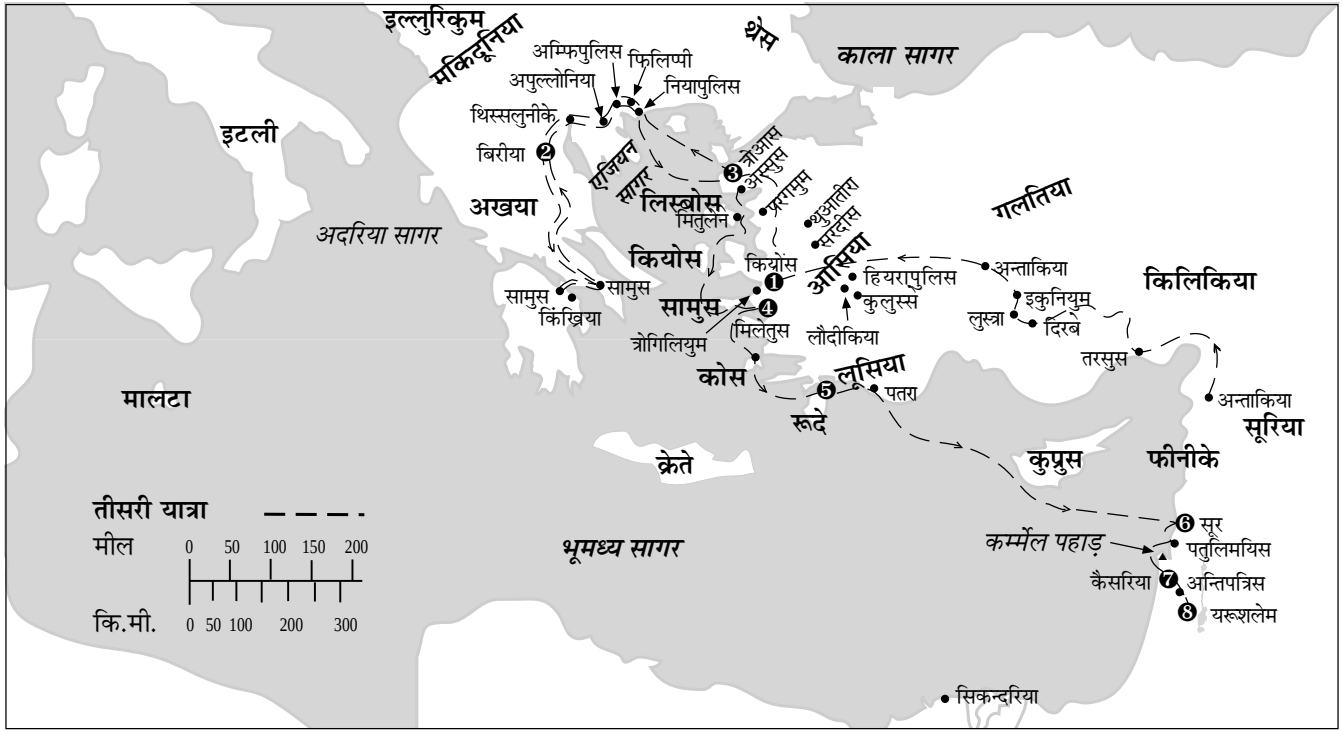

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा
(प्रेरितों 18:23-21:17)

चेलों को दृढ़ करता हुआ पौलुस गलतिया और फ्रूगिया से होता हुआ, ऊपर के देश से होकर ❶ इफिसुस में गया (18:23-28), जहां वह लगभग तीन वर्षों तक प्रचार तथा आश्चर्यकर्म करता रहा (19:1-14)। उसके बाद वह मकिदूनिया और यूनान की कलीसियाओं ❷ से फिर मिलने गया (20:1-5)। तीन महीनों के बाद, वह त्रोआस के मार्ग में ❸ मकिदुनिया से जाते हुए, फिर वहां लगभग एक सप्ताह ठहरा। वह जहाज़ पर इफिसुस के पास से होकर गया परन्तु अश्रुपूर्ण विदाई के लिए उसने इफिसुस के प्राचीनों को ❹ मीलेतुस में बुला लिया (20:13-33)। इसके बाद उसके साथी सीधे कोस, रूदे और पतरा को चले गए ❺ (21:1-17)। वे फीनीके को जाने वाले जहाज़ पर बैठ गए ❻ और सूर में चले गए, जहां भाइयों ने पौलुस को यरूशलेम में न जाने की बिनती की थी। कुछ दिनों के बाद ❼ कैसरिया में, अगबुस के द्वारा पौलुस को चेतावनी दी गई थी कि उसे अन्यजातियों के हाथ सौंपा जाएगा। फिर भी, पौलुस यरूशलेम में ❽ चला गया, जहां उस का अच्छा स्वागत हुआ परन्तु बाद में गिरफ्तार हो गया।